अवध की आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

www.avadhkaawaz.com

वर्ष–10 अंक–223 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ शुक्रवार 12 नवम्बर 2021 पृष्ठ – 8 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

उन्नाव। युवक की हत्या शिवपुरी निवासी युवक महेंद्र गौतम (28) पुत्र स्व हरिभजन गौतम जो हँसेवा (ससुराल) गया था। जहां उसकी हत्या कर दी गई। बहन ने करन नामक युवक पर जान से मारने का लगाया आरोप सूत्र शराब के नशे में धुत साले ने बहनोई की फावड़ा मार कर की हत्या कोतवाली हसनगंज क्षेत्र का पूरा मामला।

कासगंज मामले की उच्च स्तरीय जांच हो : मायावती

लखनऊ, (वेब वार्ता)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने उत्तर प्रदेश के कासगंज में एक युवक की पुलिस हिरासत में संदिग्ध मौत होने के मामले पर दुख व्यक्त करते हुये राज्य सरकार से इस घटना की उच्च स्तरीय जांच कराये जाने की मांग की है। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने गुरुवार को ट्वीट कर कहा, "कासगंज में पुलिस कस्टडी में एक और युवक की मौत अति–दुखद व शर्मनाक। सरकार घटना की उच्चस्तरीय जाँच कराकर दोषियों को सखढ़्त सजा दे तथा पीड़ित परिवार की मदद भी करे" मायावती ने पुलिस हिरासत में मौत के बढ़ते मामलों पर चिंता व्यक्त करते हुये कहा, "यूपी सरकार आए दिन कस्टडी में मौत रोकने व पुलिस को जनता की रक्षक बनाने में विफल साबित हो रही है यह अति–चिन्ता की बात है।" उल्लेखनीय है कि हाल ही में कासगंज में एक युवक अल्ताफ अहमद को पुलिस द्वारा पूछताछ के लिये पकड़े जाने के बाद हिरासत में संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत के मामले ने राजनीतिक तूल पकड़ लिया है। पुलिस इसे आत्महत्या का मामला बता रही है।

सरकार खेल और खिलाड़ियों को बढ़ावा दे रही है, जिसके बाद बदलाव दिखने लगा है : योगी

मेरठ (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेरठ जनपद में आज तोक्यो ओलंपिक और पैरा ओलंपिक के पदक विजेताओं को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने देशभर से पदक विजेता 17 खिलाड़ियों को कुल 31 करोड़ रुपये दिए हैं। मुख्यमंत्री ने मेरठ के खेल उद्योग की प्रशंसा करते हुए कहा कि जो सम्मान और प्रोत्साहन इस उद्योग को पहले मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। खेल सम्मान के जरिये मुख्यमंत्री ने पश्चिम उत्तर प्रदेश को साधने की कोशिश की। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर सहित सभी ने पश्चिम उत्तर प्रदेश से निकलने वाली खेल प्रतिभा की प्रशंसा की। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में थोड़ा विलंब हुआ। कृषि विश्वविद्यालय पहुंचकर योगी ने सबसे पहले खेल उत्पाद प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम स्थल पर मौजूद खिलाड़ियों और लोगों से 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम' के नारे लगवाने के बाद मुख्यमंत्री योगी ने 1857 की क्रांति की धरा को नमन करते हुए अपना संबोधन शुरु किया। योगी ने कहा, "सरकार खेल और खिलाड़ियों

को बढ़ावा दे रही है,जिसके बाद बदलाव अब जमीन पर दिखने लगा है। " मुख्यमंत्री योगी ने संबोधन शुरु करने से पूर्व कार्यक्रम में मौजूद केंद्रीय युवा एवं खेल मंत्री ठाकुर की प्रशंसा की जो कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। योगी ने कहा, "मेरठ को खेल उत्पाद के लिए भी जाना जाता है। एक जनपद एक उत्पाद की योजना शुरू हुई है। यह अर्थव्यवस्था को गति देगा। मेरठ का चयन बड़े शोध के बाद खेल में किया गया। मेरठ में जो खेल उत्पाद बनते हैं उनकी गुणवत्ता अलग है। " उन्होंने कहा कि भारत के पैरालंपिक दल में आठ खिलाड़ी उत्तर प्रदेश से थे। योगी ने डीएम सुहास एल वाई की कोरोना प्रबंधन को लेकर सराहना की। राज्य सरकार ने सुहास को पांच वेतन वृद्धि दी। पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वालों को दो करोड़, रजत पदक जीतने वालों को डेढ़ करोड़ और कांस्य पदक विजेताओं को एक करोड़ तथा प्रतिभागियों को 25 लाख की पुरस्कार राशि प्रदान की। इस मौके पर खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा, " दिव्यांग खिलाड़ियों ने हजारों किलोमीटर दूर जाकर भारत का मान–सम्मान बढ़ाया। ठाकुर ने कहा, "कोविड–19 के समय भी सरकार ने खिलाड़ियों को सुविधा दी। पिछली बार 19 खिलाड़ी पैरालंपिक में गये थे लेकिन इस बार 19 पदक आ गए। अभी तक पैरालंपिक में सिर्फ 12 पदक आए थे। हमारी रैंक भी 24 रही। " केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान ने कहा, "जो काम पहले हरियाणा में हुआ करता था उसे अब मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश में भी सम्मान समारोह शुरू करके किया। हरियाणा व पश्चिम उत्तर प्रदेश खेल में आगे रहे है। जो खेल विश्वविद्यालय का उपहार मिला है उससे लाभ मिलेगा। " केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "उत्तर प्रदेश सरकार ने पैरालंपिक के खिलाड़ियों का सम्मान करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खिलाड़ियों पर विशेष ध्यान दिया है। उत्तर प्रदेश में नए स्टेडियम का निर्माण हो रहा है। ग्वालियर में दिव्यांगों के लिए स्टेडियम बनाया जा रहा है। वहां दिव्यांगों के लिए अलग–अलग कोर्ट होंगे, विदेशी कोच होंगे। 2014– 21 तक 20 लाख दिव्यांगों को सहायक उपकरण वितरित किये गए।

एनटीपीसी सिंगरौली,शक्तिनगर में छठ पूजा का हुआ आयोजन

अवध की आवाज ब्यूरो

जिला सिंगरौली मध्य प्रदेश। आम जन हेतु एनटीपीसी सिंगरौली, शक्तिनगर में छठ पूजा का भव्य आयोजन किया गया। आम जन को सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से चिल्काझील की विधिवत सफाई कराई गई श्रद्धालुओं के दृष्टिगत अतिरिक्त रोशनी, सजावटी लाईट, पेय जल, प्रसाधन की सुचारु व्यवस्था की गई। सुरक्षा को चाक–चौबन्द करने के लिए प्रयाप्त मात्रा में सी.आई.एस.एफ सुरक्षा कर्मी, पुलिस कर्मी एवं निजी गार्ड की तैनाती की गई थी। इसके अलावा पूरे क्षेत्र को सी.सी.टी.वी कैमरे की निगरानी में रखा गया ताकि किसी प्रकार की अवांक्षनीय घटना को रोका सके। छठ वर्तियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कंट्रोल रूम के माध्यम से निरंतर आवश्यक सूचना प्रदान की गई एवं खोये हुए परिवार जनों को मिलाया गया। छठ घाट के चारों ओर किसी भी प्रकार के दुर्घटना से आम जन को बचाने के लिए सुरक्षा तैराक तैनात किए गए थे एवं नाव के माध्यम से भी झील में प्रवेश करने वाले लोगों को सुरक्षा प्रदान की गईद्य झील में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों हेतु सुरक्षा की दृष्टि से रस्सी एवं हुक की भी व्यवस्था की गई थी। एनटीपीसी द्वारा की गई सुरक्षा व्यवस्था,आवगमन के रास्ते की साफ–सफाई, घाट की साफ–सफाई, सुरक्षा बैनर, कोरोना से बचाव संबंधी जागरूकता बैनर सहित विभिन्न आवश्यक व्यवस्था की वजह से आम जन लाभान्वित हुए तथा छठ पूजा विधिवत सम्पन्न हुई,साथ ही किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके, इस वृहद आयोजन में सहयोग प्रदान करने के लिए सभी छठ पूजा के श्रद्धालुगण,पुलिस प्रशासन, सी. आई.एस.एफ, निजी गार्ड, यूनियन एवं एसोशिएशन के सदस्य गण एवं आयोजन समिति के सदस्यों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया गया।

गोपाष्टमी को गौआश्रय केंद्र में गौ पूजन का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी ने केंद्रों के कुशल संचालन के सम्बन्ध में दिए आवश्यक दिशा निर्देश बीमार की गयी। इसी क्रम में पूरेनेवल व महेशभारी सहित सभी गौ आश्रय केंद्रों पर गौ पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पशु चिकित्साधिकारी मुजेहना डॉक्टर

मवेशियों का समय पर इलाज व साफ सफाई हेतु दिए आवश्यक दिशा निर्देश पूरेनेवल व महेशभारी सहित सभी गौ आश्रय केंद्रों में गौ पूजन का किया गया। आयोजन पशु चिकित्सक राम कमल चौधरी व प्रधान पति मंसूर अली सहित कई प्रधान व सचिव रहे मौजूद मुजेहना विकास खण्ड अन्तर्गत ग्राम पंचायत रुद्रगढ़ नौसी में जिले की मॉडल गौआश्रय केंद्र पर गोपाष्टमी के दिन मुख्य पशु चिकित्साधिकारी रविन्द्र सिंह राठौर द्वारा विधि विधान से गौ पूजन कर गायों और गौवंशों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए इश्वर से प्रार्थना मनोज कुमार,बाबागंज क्षेत्र में तैनात पशु चिकित्सक राम कमल चौधरी,रुद्रगढ़ नौसी के ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मंसूर अली सहित कई प्रधान व सचिव उपस्थित रहे। इस दौरान मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी रविन्द्र सिंह राठौर ने आश्रय केंद्रों के कुशल संचालन के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं।उन्होने सम्बंधित क्षेत्र के चिकित्सकों को समय समय पर टीकाकरण,बीमार मवेशियों का समय पर इलाज व साफ सफाई सहित सभी व्यवस्थाओं को चुस्त दुरुस्त बनाये रखने का निर्देश भी दिए है।

मन्दिर के महंत द्वारा ग्राम वासियों के साथ शुरू की आमरण अनशन

गोंडा ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाने के लिए सन्त ने शुरू किया आमरण अनशन

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। महंत अनिल दास के मुताबिक बंधा हेट पर रखा कम क्षमता का ट्रांसफार्मर आए दिन रहता है खराब जेई द्वारा महंत से अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए की गई अनावश्यक बयान बाजी बाबा अनिल दास ने मन्दिर बंधा हेट पर ही ग्राम वासियों के साथ शुरू की अनशन मेहनवन पावर हाउस के परिक्षेत्र में गणेशपुर ग्रंट में स्थित शिव महादेव बंधा हेट मन्दिर के महंत द्वारा ग्राम वासियों के साथ आमरण अनशन की शुरुवात की गयी है।मन्दिर के महंत अनिल दास के मुताबिक बंधा हेट पर रखा कम क्षमता का ट्रांसफार्मर आए दिन खराब रहता है।जिसकी क्षमता बृद्धि के लिए करीब एक वर्ष से अधिकारियों सहित विधायक से कहा जा चुका है। लेकिन ट्रांसफार्मर बदलने के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही नही की गयी। उन्होने बताया कि जब इस बारे में उन्होंने जेई से बात की तो उन्होंने महंत से अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए अनावश्यक बयान बाजी की।जिससे झुब्ध होकर बाबा अनिल दास ने मन्दिर बंधा हेट पर ही ग्राम वासियों के साथ अनशन पर बैठ गए है। उन्होंने कहा है की जब तक ट्रांसफार्मर बदल कर जेई पर कार्यवाही नही की जाती है तब तक निर्बाध रूप से आमरण अनशन किया जाएगा।

जनपदवासियों को किया गया जागरूक: , जनपद में चलाया गया मतदाता जागरूकता अभियान:

अवध की आवाज ब्यूरा

उन्नाव। (सू0वि0) जिला निर्वाचनअधिकारी/जिलाधिकारी श्री रवीन्द्र कुमार के निर्देशन में जिला विद्यालय निरीक्षक राजेन्द्र पाण्डेय ने बताया कि स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद के विभिन्न तहसीलों के विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम कराए गए जिसमें प्रमुख रुप से बीघापुर तहसील के अंतर्गत हुबलाल इंटर कॉलेज खेड़ा में छात्र/छात्राओं द्वारा मतदाताओं को जागरूक करने के लिए मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई एवं विद्यालय में पोस्ट प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इसी प्रकार राजकीय हाई स्कूल अलीपुर मिचलौला, मीतखेड़ा, शिवगढ, कोल्हूआ गाड़ा, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज सफीपुर, राजकीय इण्टर कालेज उन्नाव, कमलापति इंटर कॉलेज बीघापुर आदि मे पोस्टर/पेंटिंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हुए मतदाता जागरूकता संबंधित आकर्षक पेंटिंग व जागरूक करने वाले स्लोगन बनाते हुए स्वीप कार्यक्रम में अपना योगदान प्रस्तुत किया।

मा0 मंत्री जल शक्ति एवं बाढ़ नियंत्रण उ0प्र0 डॉ0 महेंद्र सिंह के द्वारा नंदिनी नगर महाविद्यालय नवाबगंज में आयोजित नेशनल कुश्ती चौंपियनशिप का शुभारंभ,,

अवध की आवाज ब्यूरा

गोंडा। माननीय मंत्री जल शक्ति एवं बाढ़ नियंत्रण उत्तर प्रदेश डॉक्टर महेंद्र सिंह के द्वारा नंदिनी नगर महाविद्यालय नवाबगंज में आयोजितन कुश्ती चौंपियनशिप का शुभारंभ किया। निर्माणाधीन मल्टीपल मिनी स्टेडियम का लोकार्पण के अवसर पर पुलिस अधीक्षक गोंडा संतोष कुमार मिश्रा उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सकुशल व शांतिपूर्ण कराया संपन्न।

फांसी के फंदे से लटकता मिला नवविवाहिता का शव

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। स्थानीय थाना क्षेत्र के भवानीपुर उपाध्याय खास गांव में नवविवाहिता की छत के कुंडे से लटक कर संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत, घटना से घर परिवार सहित गांव में छाया मातमी सन्नाटा परिजनों की सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर परिवार व आसपास के लोगों से घटना से संबंधित जानकारी प्राप्त की तथा मृतका के मायके वालों को सूचना दी गई। मायके के सभी सदस्य दिल्ली में होने की वजह से उनके आगमन तक पुलिस ने वही रात में रुक कर शव की निगरानी की और जब बुधवार सुबह ससुराल पक्ष के लोग पहुंचे तो उनकी मौजूदगी में पुलिस ने पंचनामा भरवा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय गोंडा भेजा। परिजनों से मिली जानकारी के मुताबिक उनके पुत्र विकास का विवाह 6 माह पूर्व 15 जून को मुंडेरवा माफी भीवपुर निवासी राकेश की 22 वर्षीय पुत्री मंजू देवी से हुई थी मंगलवार की शाम पति पत्नी के बीच कुछ बाता कहानी हुई पति विकास अपने परिजनों के साथ खेत में काम करने चला गया और मृतका मंजू देवी अपने कमरे में जाकर

अंदर से दरवाजा बंद कर ली दरवाजा जब काफी देर तक नहीं खुला तो मृतका के देवर नें कई बार आवाज लगाई जवाब न मिलने पर झरोखे से देखा तो मंजू फांसी के फंदे से लटक चुकी थी। छत के झरोखे से अंदर जाकर देवर ने दरवाजा खोला तो आस–पड़ोस के लोगों ने मृतिका को फांसी के फंदे से उतारा उस समय मंजू देवी के साथ में चल रही थी। अस्पताल ले जाने का प्रयास करते वक्त महिला की मौत हो गई। परिजन रोने चिल्लाने लगे और देखते ही देखते गांव के सैकड़ों लोग वहां इकट्ठा हो गए। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक अरुण दुबे से जानकारी ली गई तो उन्होंने बताया कि ससुराल पक्ष के द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर पति, सास, ससुर के विरुद्ध दहेज हत्या का मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

जौनपुर के पास मालगाड़ी की २१ बोगी पलटीं, वाराणसी-सुल्तानपुर रेल मार्ग अवरुद्ध

जौनपुर, (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में गुरुवार को सुबह श्रीकृष्ण नगर (बदलापुर) रेलवे स्टेशन के समीप उदपुर घाटमपुर के पास सुल्तानपुर से मुगलसराय की ओर जा रही मालगाड़ी की 21 बोगी पलट गईं। इसके चलते जौनपुर–वाराणसी रेल मार्ग पर रेल यातायात अवरुद्ध होने के कारण इस मार्ग पर चल रही रेलगाड़ियों को यथास्थान पर खड़ा किया गया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार मुगलसराय से कोयला लाने के लिए सुल्तानपुर से सुबह 06:58 बजे मालगाड़ी रवाना हुई। मालगाड़ी में 59 बोगी लगी थीं। मालगाड़ी श्रीकृष्ण नगर (बदलापुर) रेलवे क्रॉसिंग को पार करने के बाद सुबह 07:58 बजे उदपुर घाटमपुर के पास पहुंची थी। अचानक कुछ बोगी पटरीसे उतर गईं। ट्रेन की गति अधिक होने के कारण आगे से 16 और पीछे से 21 बोगी को छोड़कर बची 21 बोगी पलट गईं। रेल अधिकारियों के मुताबिक मालगाड़ी के चालक ए के चौहान और गार्ड संजय यादव सकुशल हैं। घटना के कारण वाराणसी–सुल्तानपुर रेल मार्ग जाम हो गया है। इस मार्ग से रवाना होने वाली महामना एक्सप्रेस और सुल्तानपुर जौनपुर वाराणसी पैसेंजर रेलगाड़ी बीच में ही खड़ी है। इसके चलते यात्रियों की परेशानी बढ़ गयी है। पीडब्ल्यूआई जौनपुर बश्जेश यादव ने बताया कि सुल्तानपुर से मुगलसराय जा रही बाक्सन मालगाड़ी के किसी डिब्बे का पहिया जाम होने के कारण यह घटना हुई है। मालगाड़ी श्रीकृष्ण नगर स्टेशन के आगे आउटर पर जैसे ही रेललाइन परिवर्तन के लिए आगे बढ़ी तभी अचानक उसका एक डिब्बा पलट गया। घटना के कारण वाराणसी लखनऊ बाया जफराबाद रेललाइन पर ट्रेनों का परिचालन ठप हो गया है। घटना की सूचना उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल के उच्च अधिकारियों को दे दी गई है। स्थानीय रेलवे के अधिकारी घटनास्थल की ओर रवाना हो गए है।

सम्पादकीय

क्यों अंतिम सांसें लेता किसान आंदोलन

तीन कृषि कानूनों के निरस्त होने तक अपना आंदोलन जारी रखने का फैसला करने वाले ढाई राज्यों के किसान अब पूरी तरह से पस्त और थके लग रहे हैं। इनके धरना स्थलों पर किसानों की उपस्थिति लगातार घट रही है।

पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान नेताओं की लाख कोशिशों के बावजूद अपने आंदोलन को अखिल भारतीय चरित्र तो एक दिन के लिए भी नहीं दे सके। इस आंदोलन को उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों को छोड़कर अन्य किसानों तक का समर्थन नहीं मिला है। 75 जिलों में मात्र चार–पांच जिलों के किसान ही इसमें सक्रिय दिखे इसलिए इस आंदोलन को सवा दो राज्यों का आंदोलन कहना पड़ रहा है। महाराष्ट्र और गुजरात का किसान आंदोलन भी बहुत सशक्त है लेकिन वहां के किसान इन सवा दो राज्यों के किसानों के साथ नहीं जुड़े।

इन किसानों की फिलहाल सरकार से कहीं कोई बात नहीं हो रही है। इसके लिए जिम्मेदार किसान नेता स्वयं हैं। आप कह सकते हैं कि विगत 21 जनवरी के बाद किसान और सरकार के बीच बातचीत के रास्ते पूरी तरह बंद हो गए हैं। यह स्थिति अपने आप में गंभीर है। किसान सरकार से कह रहे हैं कि तीनों किसान कानून वापस लो तभी कोई बात होगी। वापस नहीं लोगे तो आंदोलन जारी रहेगा। सरकार का कहना है कि ये शर्त नहीं मानी जा सकती है। सरकार किसानों से बातचीत के लिए तैयार अवश्य है। सरकार किसानों से पूछ रही है कि वह यह बताए तो सही कि आखिर इन कानूनों में खराबी कहां है। सरकार के इस सवाल का जवाब देने के लिए ये आंदोलनजीवी तैयार नहीं हैं। क्या यह अब किसी को बताने की जरूरत है कि किसान आंदोलन से जुड़े लोग अपनी जिद और हठधर्मिता पर उतरे हुए हैं।

पहले पंजाब के किसानों की ही बात कर लेते हैं। पंजाब में भूमि के नीचे का जलस्तर बहुत ही नीचे जा चुका है। हालात वहां पर लगातार खराब हो रहे हैं। इस स्थिति से बेपरवाह किसान राज्य में धान और गेहूं की खेती करने के अलावा कुछ और बदलाव करने से बाज नहीं आ रहे। इन दोनों फसलों की खेती के लिए जल की खूब मांग होती है। पर ये सुनने के तैयार नहीं हैं। इन्हें पता है कि इन्हें इनकी फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तो मिलेगा ही। इन्हें बिजली और पानी मुफ्त मिलती ही है। खाद पर भी सब्सिडी मिलती है। पंजाब का किसान अपनी फसलों पर तमाम तरह के कीटनाशक भी भरपूर डालता है। इस कारण जो इनके द्वारा पैदा अनाज का सेवन करते हैं, उन्हें कैंसर जैसा असाध्य रोग अपनी चपेट में ले रहा है। पंजाब में धरती बंजर हो रही है, क्योंकि वहां के बड़े किसानों का एक वर्ग समझ ही नहीं रहा है कि उनके राज्य में जमीन तबाह हो गई है। फिर इन्हें पराली जलाकर दूसरों की सेहत खराब करने में भी शर्म नहीं आती है। पर इन्हें समझाए कौन। नए कानूनों से इनके हित सुरक्षित हैं, पर ये मान नहीं रहे क्योंकि इन्हें देश विरोधी शक्तियों का समर्थन और संरक्षण मिला हुआ है।

यह शीशे की तरह से साफ हो गया है कि किसानों का यह कथित आंदोलन कुछ वामपंथी ताकतों, देश विरोधी एनजीओ, खालिस्तान समर्थकों वगैरह के कारण ही पैसे के बल पर चल रहा है। यही लोग कभी नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और प्रस्तावित राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) के विरोध में सड़कों पर आ जाते हैं। बस इनके चेहरे बदलते हैं। ये सड़कों और हाईवे पर बैठ जाते हैं। फिर आम जन को इनके धरने के कारण कितना भी नुकसान हो, इसकी यह परवाह नहीं करते। यह देश ने शाहीन बाग में भी देखा था।

अब हरियाणा के किसानों की बात कर लें। इससे राज्य के जाट मुख्य रूप से जुड़े हुए हैं। इनकी मोदी सरकार से नाराजगी की वजह बिल्कुल अलग है। इन्हें गुस्सा इस कारण से है कि राज्य में लगातार दो बार इनके समर्थन के बिना राज्य में भाजपा की सरकार बन गई। पहली बार पूर्ण बहुमत के साथ और दूसरी बार भाजपा को पूर्ण बहुमत से कुछ कम सीटें मिलीं। इन किसानों को लगता है कि भाजपा ने उनकी ताकत छीन ली है। उन्हें सियासत की दुनिया में हाशिए पर डाल दिया। इसलिए इन्होंने राज्य में जाटों को आरक्षण की मांग पर तगड़ा बवाल भी काटा था। यह तब हुआ था जब मनोहर लाल खट्टर पहली बार सत्ता पर काबिज हुए ही थे। यह 2014 की बात है। तब जाटों को आरक्षण देने की आड़ में राज्य में कसकर हिंसा हुई थी और सरकारी संपत्ति को नष्ट किया गया था।

अगर बात पश्चिम उत्तर प्रदेश के किसानों की करें तो वे तो शुरू में इस आंदोलन के साथ ही नहीं थे। ये तो मुख्य रूप से गन्ना किसान हैं और इनकी उपज चीनी मिलें खरीद ही लेती हैं। हां, चीनी मिलें इन्हें गन्ना की कीमत देने में कुछ देरी कर देती हैं। अपने को राजनीति की दुनिया में स्थापित करने के लिए राकेश टिकैत इस आंदोलन का हिस्सा बन गए। पर अब किसानों का आंदोलन लंबा खिंचने के कारण किसान आंदोलन से दूर हो रहे हैं। आखिर किसी भी आंदोलन की कोई सीमा होती है।

दरअसल किसान नेता यह बता नहीं पा रहे हैं कि कृषि कानूनों से किसानों को नुकसान कहां होगा। क्या यह किसानों के लिए खराब स्थिति होगी कि वे अपनी उपज देश में कहीं भी, किसी भी व्यक्ति या संस्था को अपनी मर्जी की कीमत पर बेचें ? सरकार किसानों से धान–गेहूं की खरीद तो पहले की ही तरह करती रहेगी और किसानों को एमएसपी का लाभ भी पहले की तरह देती रहेगी। अब किसान मंडी के साथ–साथ मंडी से बाहर भी अपनी उपज बिना रोकटोक के बेच सकेंगे। एक बात और। जिस प्रकार आर्थिक सुधारों के बाद आशंका जताई जा रही थी कि सेवा क्षेत्र तबाह हो जाएगा, लेकिन आज तीन दशकों बाद सेवा क्षेत्र में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है। भारत की 20 फीसदी आबादी सेवा क्षेत्र से जुड़ गई है। देखिए, किसानों के धरने टिकरी, सिंघू बार्डर और गाजीपुर बार्डर पर चल रहे हैं। दूसरी तरफ, इनसे राजधानी का किसान या इन बार्डरों के आसपास का किसान तक नदारद है। वह इस आंदोलन का हिस्सा नहीं है। वह अपने खेतों में पूरी मेहनत से काम कर रहा है। किसान नेता आखिर क्यों नहीं बताते इसकी वजह ? लोकतंत्र में अहिंसक आंदोलन करने का सबको अधिकार है। किसानों को भी है। पर इसबार किसानों के नाम पर कुछ संदिग्ध शक्तियां ही आंदोलन का हिस्सा बन कर रह गई हैं।

मध्यप्रदेश में सबसे पहले जनजातियों ने फूंका था आजादी के संघर्ष का बिगुल

–रंजना चितले–

भारत की संस्कृति, स्वाभिमान और स्वायत्तता के लिए जितना बलिदान और संघर्ष जनजातियों का है, वैसा उदाहरण संसार में कहीं नहीं मिलता।

भारत में प्रत्येक विदेशी आक्रमणकारी के विरुद्ध जनजातियों ने सबसे पहले शस्त्र उठाये हैं। यदि देशी सत्तायें पराभूत हुई हैं तो उन्हें संरक्षण देने का कार्य भी जनजातियों ने ही किया है। इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जब किसी आक्रमणकारी के भय या लालच से भ्रमित होकर जनजातियों ने घात किया हो। अंग्रेजी राज में सबसे पहले जनजातियों ने स्वत्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिए मजरों, टोलों से तीर–कमान उठाये और अंग्रेजों से संघर्ष किया। मध्यप्रदेश में जनजाति क्रांति का लम्बा इतिहास है।

भारत में स्वाधीनता का अंकुर स्वतंत्रता प्रिय जनजातियों के बीच ही अंकुरित हुआ। वनों और पर्वतों में रहने वाली जनजातियों की जनजातीय चेतना ने अंग्रेजों सहित हर आततायी, निरंकुश और आक्रमणकारी सत्ता के विरुद्ध निर्लिप्त संघर्ष किया। अपनी माटी के प्रति समर्पित इन जनजातियों के इसी स्वाधीनता संघर्ष को आगे चलकर समूचे राष्ट्र ने स्वीकारा। इसीलिए अंग्रेजों ने जनजातियों का दमन करने के लिए दो काम किये। पहला शिक्षा और सेवा के नाम पर परिवर्तन का अभियान चलाया और दूसरा कुछ जनजाति समूहों को अपराधी घोषित किया। उत्तर में विंध्याचल से लेकर दक्षिण–पश्चिम में सहयाद्रि के पश्चिमी घाट तक का अंचल भीलों का निवास स्थान था। अंग्रेजी राज के चलते भीलों पर दमन, शोषण का लम्बा सिलसिला चला। अन्ततः भीलों ने भी शांतिपूर्ण जीवन छोड़कर शस्त्र उठाए और अंग्रेजों के लिए आतंक बन गए। भीलों ने श्रृंखलाबद्ध संघर्ष किया। सन् 1817 में खानदेश के भीलों का विद्रोह हुआ। अंग्रेजों ने इस विद्रोह के पीछे पेशवा के मंत्री त्रियंबक के होने की बात कही। बम्बई प्रेसीडेन्सी के एलफिंस्टन ने लिखा है– 'त्रियंबक और उनके दो भतीजे गोंडा जी दंगल और महीपा दंगल खानदेश के विद्रोही नेता हैं।'

हरे–भरे वनों में क्रांति की ज्वाला खानदेश पर अंग्रेजों का कब्जा सन् 1818 में होते ही भीलों ने पराधीनता को सिरे से नकार दिया और संघर्ष शुरू कर दिया। अंग्रेजों ने क्रूरता से भील क्रांति का दमन किया। भील नायकों को कैद कर लिया गया, रसद की सप्लाई रोक दी गयी और पहाड़ियों के दर्रों पर सेना तैनात कर दी गई। यही नहीं भीलों को नौकरी और भत्ते का प्रलोभन भी दिया गया लेकिन अंग्रेजों को सफलता नहीं मिली। भीलों ने पुनः क्रांति सन् 1819 में की, पहाड़ी क्षेत्र की विभिन्न चौकियों पर कब्जा कर लिया, भीलों की टोलियों ने अंग्रेज शासकों की हालत खराब कर दी थी। यह सिलसिला लंबे समय तक चला। भीलों के नेता शहीद हो जाने पर नये नेता नेतृत्व संभाल लेते थे और चौकियों की रक्षा करते थे। इस तरह पहाड़ियों और जंगलों में भील अजेय रहे। अंग्रेजों ने कई साजिशें रचीं, यहां तक कहा कि भील हथियार रख देंगे तो वे उन्हें माफ कर देंगे। स्वाभिमानी भील इस पर भी नहीं झुके तो अंग्रेजों ने दमन चक्र तेज किया। सतमाला पहाड़ी के भील सरदार चील नायक को पकड़कर फांसी दे दी गई।

भील नायक दशरथ ने सन् 1820 में मोर्चा संभाला तो हिरिया नायक के नेतश्त्व में भीलों ने सन् 1822 में अंग्रेजी राज को चुनौती दी। कर्नल रॉबिन्स सन् 1823 में बड़ी सेना लेकर भीलों के क्षेत्र में दाखिल हुए। दो वर्षों तक भीलों का कत्ल किया गया। उनकी बस्तियों में आग लगा दी गयी, इस पर भी वे भीलों को तोड़ नहीं पाये।

सन् 1824 में त्रियंबक के भतीजे गोंडा जी दंगलिया ने भीलों को एकत्र कर विप्लव किया। वहीं सन् 1826 में दांग सरदारों और लोहारा के भीलों ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा लिया। सन् 1827 में लेफ्टिनेंट आउटरम ने भील सेना की स्थापना की और भील क्रांति को दबाने के लिए उनका उपयोग किया गया। इसके बाद भी कई साल तक भील आक्रोश सुलगता रहा।

धार राज्य के भीलों ने सन् 1831 में संघर्ष शुरू किया तो सन् 1846 में मालवा के भीलों ने मोर्चा लिया। खानदेश के भीलों ने सन् 1852 में प्रबल संघर्ष किया और फिर सन् 1857 में भगोजी नायक तथा काजर सिंह के अलावा कई भील–भिलाला नायक और असंख्य भीलों ने युध्द में अपना योगदान दिया। भारत के पहले मुक्ति संग्राम सन् 1857 में लगभग 7 लाख स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिन्हें अंग्रेज विद्रोही कहते थे। जब सन् 1857 की क्रांति असफल हुई तो इन क्रांतिकारियों ने वनों में ही शरण ली। इनकी तलाश में अंग्रेजों की सेना ने जंगलों में आग लगाई, जनजातियों के गांव जलाये। लेकिन फिर भी किसी जनजाति बंधु ने समर्पण नहीं किया। यदि हम सन् 1857 के विवरण में जायें तो पूरे देश में नेतृत्व भले ही देशी सत्ताओं या सैनिकों ने किया हो लेकिन उनके पीछे सामूहिक संघर्ष जनजातियों का ही रहा है।

स्वाधीनता संग्राम का युगान्तकारी मोड़

वस्तुतः सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम इतिहास का एक युगान्तरकारी मोड़ है, जिसमें भूत, वर्तमान और भविष्य समाहित है। इस मुक्ति संग्राम के बीज सन् 1857 से ठीक 100 वर्ष पूर्व तभी पड़ गये थे जब अंग्रेजों ने छल–बल से सन् 1757 में प्लासी के युद्ध में विजय के बाद अपना शासन आरम्भ किया था। चेतना के स्तर पर लगे इसी अंकुर ने सन् 1857 में महासंग्राम का रूप लिया।

कालान्तर में भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की प्रेरणा ने श्रश्खलाबद्ध आंदोलनों की पश्ष्ठभूमि निर्मित की। अंग्रेजों की लूट–खसोट और अत्याचार से भारतीयों का सब्र टूट गया। स्वधर्म और स्वराज की गूंज के साथ भारतवासी उठ खड़े हुए, जिसमें सम्पूर्ण भारत के स्वर समाए थे। सन् 1857 की क्रांति से लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व संत रामदास द्वारा शिवाजी महाराज को दिया मंत्र देश में गूंज उठा। मंत्र था:

धर्मासाठी मरावे, मरोनी अवध्यांस मारावे।
मारिता मारिता घ्यावे, राज्य आपुलेम

अर्थात् अपने धर्म के लिये मरो। मरते–मरते शत्रु का विनाश करो। इसी तरह लड़ते रहो, मरते रहो और अपना राज्य वापस ले लो। इसी मनोविज्ञान के साथ अंग्रेजों की अत्याचारी, अन्यायी, दमनकारी नीति, आर्थिक शोषण, सामाजिक रीति–रिवाजों और धार्मिक परम्पराओं में गंभीर हस्तक्षेप के कारण उपजे असंतोष की छटपटाहट फूट पड़ी थी।

महासमर में 10 मई 1857 को भारतीयों ने बलिदानी पहल कर यह साबित कर दिया कि अपनी धरती, अपना देश और अपनी स्वतंत्रता के लिए भारतीय जन किसी भी सीमा तक बलिदान दे सकता है।

स्वाभिमानी स्वतंत्रता प्रिय जनजातियों ने तो आरम्भ से ही विदेशी सत्ता को नकार दिया था। सन् 1857 में मुक्ति संग्राम की चिंगारी जब उत्तर भारत होती हुई मध्यभारत पहुंची तो मालवा–निमाड़ के जनजाति भील–भिलाला नायकों ने मोर्चा थामा। इन नायकों में टंटया भील, भीमा नायक, खाज्या नायक, सीतराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई आदि ने संघर्ष का गौरवपूर्ण इतिहास रचा। जनजाति क्रांतिनायकों के साथ बरुद के श्यामसिंह, अकबरपुर के रेउला नायक, मकरोनी परगना के कल्लू बाबा, नाना जगताप, दौलत सिंह, टिक्का सिंह, परगना सिकन्दर खेरा के निहाल सिंह के अतिरिक्त फौजी टीकाराम जमादार और जवाहर सिंह ने मिलकर अनूठा संघर्ष किया।

सेठ–साहूकारों के चंगुल से गरीबों को दिलाई मुक्ति

सन् 1857 क्रांति के दिनों में सम्पूर्ण मालवा, निमाड़ में क्रांतिकारियों का जाल फैला था। खरगौन और उसके आसपास का क्षेत्र क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। जनजाति क्रांतिकारियों की श्रश्खलाबद्ध व्यवस्था अद्भुत थी। एक नायक के बलिदान होते ही दूसरा नायक मोर्चा थाम लेता था ताकि क्रांति अनवरत चलती रहे। इन भील जननायकों में टंटया भील तो अपने शौर्य और पराक्रम से अलौकिक किंवदंती बन गये। टंटया भील का जन्म सन् 1842 के आसपास हुआ। मात्र 16 वर्ष की आयु में वह क्रांतिवीर हो गये। वह हजारों बहनों का भाई और तरुणों का मामा था। संकट में लोग टंटया मामा को पुकारते। वह हवा की तरह आता, लोगों को शोषण से मुक्त करवाता और अगले मोर्चे पर चल देता। उसने अंग्रेजों के चाटूकार सेठ–साहूकारों के चंगुल से दीन–हीन गरीबों को मुक्ति दिलाई, अंग्रेजों से लगातार संघर्ष किया और जनयोध्दा बन गया। यही नहीं वन में शरण के लिए आये सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों का वह आश्रयदाता भी था।

15 सितम्बर 1857 को उसकी भेंट क्रांति के महानायक तात्या टोपे से हुई। उसने तात्याटोपे से गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया। टंटया के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था शोषकों को दण्ड देना और हर गरीब को उसका हक दिलाना। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध उस अग्नि को और प्रज्ज्वलित किया जो वनांचलों और पर्वतों की तहलटियों में बसे टोलों में उसके जन्म से भी पहले नादिर सिंह, चीलनायक, सरदार दशरथ, हिरिया, गौंडाजी, दंगलिया, शिवराम पेंडिया, सुतवा, उचेत सिंह और करजर सिंह आदि नायकों ने सुलगाई थी। टंटया के आक्रामक मोर्चों से अंग्रेज बौखला गये। उसे पकड़ने के लिए पुलिस बिग्रेड तक की स्थापना कर दी गई पर अंग्रेजी फौज उस तक पहुंच न सकी।

नर्मदा किनारे मध्यप्रदेश और गुजरात की पट्टी का शेर और झाबुआ वेस्ट के भीलों के आदर्श टंटया को पकड़ना आसान न था। अंततः अंग्रेजों ने छल, बल का सहारा लिया, मानसिंह ने गद्दारी का इतिहास रचा। 04 दिसम्बर सन् 1889 को फाँसी पर चढ़कर शोषितों का सहारा और शोषकों को छका देने वाला मसीहा टंटया भील बलिदान हो गया।

शोषण और अत्याचार के विरुद्ध थे क्रांतिकारी

स्वाधीनता संघर्ष और जनजातीय चेतना का एक ऐसा ही भील नायक हुआ है भीमा नायक। मध्यप्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के इस नायक ने सन् 1840 से सन् 1864 तक अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों की क्रांति का नेतश्त्व किया। तात्या टोपे से प्रेरित और उन्हें नर्मदा पार करवाने वाले इस नायक ने सन् 1857 के स्वातंर्त्य समर में निमाड़ में अंग्रेजों को हिलाकर रख दिया। पश्चिम मध्यभारत की भील जनजातियों का नेतश्त्व करने वाला भीमा नायक बड़वानी रियासत के पंचमोहली गाँव का रहने वाला था। सन् 1857 के समर में अंग्रेजों से सीधी भिड़ंत के बाद अंग्रेजों ने खानदेश भील कोर को उसके पीछे लगा दिया था लेकिन वह उसे पकड़ न सके। भीमा नायक अपने साथियों मोवासिया, रेवलिया नायक और दस हजार क्रांतिकारियों के साथ डंटा रहा। अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों से मुक्ति के इस मोर्चे में भीमा की माँ सुरसी ने भी एक क्रांतिकारी टोली का नेतश्त्व किया। माँ सुरसी को कैद कर अंग्रेजों ने भीषण यातनाएँ दीं। भूख–प्यास से तड़पती सुरसी ने जेल में ही अपना बलिदान दिया।

प्रतिशोध में भील क्रांतिकारियों ने हमले तीव्र कर दिये। सम्पूर्ण निमाड़ में क्रांतिकारियों का जाल फैला था। क्रांति गतिविधियों में जुलाई सन् 1857 में खरगौन क्षेत्र में बाम्बे मार्ग पर, अक्टूबर सन् 1857 में ब्रह्मानगाँव में, मंडलेश्वर, महेश्वर, राजपुर खरगौन के अलावा पीपलखेड़ा और खरसन गाँव में तीव्र हमले हुए। क्रांति अभियानों से भयभीत अंग्रेज परिवार सहित खरगौन छोड़ इन्दौर भाग गये। क्रांति को दबाने के लिये महेश्वर और मण्डलेश्वर में फोर्स तैनात की गई। अंग्रेजों के दमन चक्र की परवाह किये बिना स्वाभिमानी भीलों ने हथियार नहीं डाले।

सन् 1857 की क्रांति को दबाने के बाद जहाँ सारे भारत में अंग्रेजों ने सत्ता हासिल कर ली थी। वहीं भील योध्दा अपने मोर्चे पर डटे रहे। निमाड़ में सभी नायकों ने मिलकर 16 दिसम्बर सन् 1866 को आक्रमण किया। अंग्रेजों को बड़ा नुकसान हुआ। इसमें धर–पकड़ का सघन अभियान चला। कई नायक पकड़े गये, पर भीमा नायक को पकड़ न सके। भीमा की सीधे गिरफ्तारी संभव नहीं थी, इसलिए अंग्रेजों ने षड़यंत्र रचा। गद्दार की सूचना पर 2 अप्रैल सन् 1867 को घने जंगल में सोते हुए कैद किया। भीमा ने मृत्यु तुल्य यातनाएँ सहीं पर अन्त तक अंग्रेजों से समझौता नहीं किया।

बड़वानी के खाज्या नायक

खाज्या नायक निमाड़ के सेंधवा घाट के निवासी थे। उन्होंने अंग्रेजी राज को नकारते हुए अंग्रेजों की नौकरी छोड़ दी और बड़वानी क्षेत्र में भीलों के स्वतंत्रता संग्राम की कमान संभाली। लगातार संघर्ष किया और बगैर किसी समझौते के फाँसी पर चढ़ गए।

महासंग्राम के कुछ समय पूर्व सन् 1857 से ही क्रांति महानायक तात्या टोपे खाज्या नायक के संपर्क में थे। ग्वालियर के महादेव शास्त्री और पुनासा के नारायण सूर्यवंशी से निमाड़ में होने वाले पत्रों के आदान–प्रदान में खाज्या नायक की प्रमुख भूमिका थी। खाज्या नायक की क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल 800 क्रांतिकारियों में भीलों के अतिरिक्त मकरानी और अरब योध्दा भी शामिल थे। खाज्या नायक ने विपन्न गरीबों के लिए 20 जनवरी, 1858 को ले. एटिकन्स और लें. पोरबिन ने नेवली के दक्षिण पश्चिम में खाज्या के दल पर हमला कर किया। इसमें खाज्या नायक की पराजय हुई। सिरपुर के आसपास के सभी क्रांतिकारी भील और भीमा नायक का दल भी खाज्या नायक के साथ हो लिया।

खाज्या ने सन् 1857 महासंग्राम के तत्कालीन विराम के बाद भी अपना युध्द जारी रखा। लगातार युध्दों की श्रंखला में 1 जुलाई, 1860 में अंग्रेजों से प्रत्यक्ष युध्द हुआ। इस युध्द में खाज्या नायक के 1500 क्रांतिकारी शहीद हुए और सैकड़ों गिरफ्तार किए गए। 150 क्रांतिकारियों को पेड़ से बांधकर गोली से उड़ा दिया गया। शेष साथियों को पलायन करना पड़ा। खाज्या नायक को पकड़ने में असमर्थ होने पर अंग्रेजों ने साजिश रची इसमें रोहिद्दीन नामक मकरानी जमादार को शामिल किया गया। 3 अक्टूबर, 1860 को स्नान उपरांत सूर्य उपासन करते समय खाज्या नायक पर गद्दार रोहिद्दीन ने पीछे से गोली चला दी। अपनों की गद्दारी से निमाड़ के भील महायोधदा के संघर्ष को नियति ने विराम लगा दिया।

निमाड़ के सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह भिलाला

सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई, भिलाला जनजाति नायक थे। उन्होंने सन् 1857 के युध्द में अंग्रेजों के विरुध्द निमाड़ क्षेत्र में आवाज उठाई। शोषण के खिलाफ मोर्चा लिया और अंग्रेजों से युध्द करते हुए प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

सन् 1857 की क्रांति के समय बड़वानी रियासत के आरंभ में खाज्या नायक और भीमा नायक ने मोर्चा संभाल लिया। अंग्रेजों द्वारा इन भील नायकों के दमन के बाद सीताराम कंवर और रघुनाथसिंह मंडलोई ने भिलाला क्रांति की कमान संभाली। इन क्रांति नायकों ने भील–भिलाला के तीन हजार क्रांतिकारियों का संगठित दल बनाया और होल्कर दरबार के सवारों, सिपाहियों आदि को भी क्रांति के लिए प्रेरित किया।

क्रांति दल खरगौन की ओर बढ़ा फिर 30 सितम्बर, 1858 को क्रांतिकारियों ने बालसमुन्द चौकी पर अधिकार किया और जामुनी चौकी को लूटकर जला दिया। दल प्रमुख सीताराम कंवर को पकड़ने के लिए अंग्रेज सरकार ने पाँच सौ रुपये के ईनाम की घोषणा की तभी अकबरपुर क्षेत्र में सीताराम कंवर ने तीव्र हमले किये। क्रांतिकारियों ने पहाड़ी से नीचे आकर दो चौकियों और डाकघर पर कब्जा किया और डाक के घोड़ों को छीन लिया। 8 अक्टूबर, 1858 को वीर योध्दा सीताराम कंवर और उनके साथी बरूद गाँव की ओर बढ़े। ब्रिटिश फोर्स का उनके दल से बंड नामक स्थान पर युध्द हुआ। इस मुठभेड़ में क्रांतिकारियों की हार हुई। 20 क्रांतिकारी शहीद हुए जिनमें नायक सीताराम कंवर और हवालदार ज्वाला भी थे। दल के 78 क्रांतिकारियों को कैद कर फाँसी दे दी गयी।

नायक सीताराम कंवर के शहीद होते ही अक्टूबर 1858 के आसपास टांडा बरूद के भिलाला नायक रघुनाथसिंह मंडलोई ने क्रांति की कमान थामी।

नायक रघुनाथ सिंह मंडलोई अपने अभियान के बाद अक्सर बीजागढ़ में ठहरते थे। उन्हें पकड़ने के लिए कीटिंग बीजागढ़ किले पर धावा बोलने के लिए एक फोर्स लेकर बीजागढ़ की ओर बढ़ा। बड़वानी में 8 अक्टूबर की शाम को होल्कर राज्य की फोर्स भी कीटिंग से आ मिली। मेजर कीटिंग ने बीजागढ़ किले में रघुनाथ सिंह मंडलोई और अन्य एकत्रित क्रांतिकारियों के पास संदेश भेजा कि वे बातचीत के लिए आएं। रघुनाथ सिंह मंडलोई कीटिंग के पास आये लेकिन बातचीत के स्थान पर मेजर कीटिंग ने छल से रघुनाथ सिंह को बन्दी बना लिया।

शंकरशाह–रघुनाथशाह

स्वाधीनता संग्राम के बलिदानियों की इसी श्रंखला में विश्व इतिहास में बलिदान का अनूठा उदाहरण है जबलपुर अंचल के राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह का। गोंडवाना के गोंड राजवंश के प्रतापी राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह ने भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सन् 1857 में जबलपुर क्षेत्र का नेतृत्व किया था। राष्ट्रभक्ति भावपूर्ण कविता लिखने पर राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह को तोप से उड़ा दिया गया था। वर्तमान में जबलपुर नगर का हिस्सा बना पुरवा ग्राम जो जबलपुर से चार मील दूर स्थित था, इसी गाँव में राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह का निवास था। यहीं रह कर उन्होंने गुप्त रूप से सन् 1857 के महासंग्राम में सैनिकों को क्रांति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था। क्रांति योजना राजा शंकरशाह के निवास पर ही बनी थी। जबलपुर की 52वीं रेजीमेंट के सिपाही इस सिलसिले में अक्सर राजा शंकरशाह के घर जाया करते थे। अपने क्रांतिकारी साथियों और 52वीं रेजीमेंट के सैनिकों के साथ मिलकर पिता–पुत्र ने क्रांति योजना बनाई। मुहर्रम के दिन छावनी पर आक्रमण करना सुनिश्चित किया गया। लेकिन भारतीय इतिहास का नकारात्मक पक्ष पुनः प्रभावी हुआ। देश के गद्दार ने यह सूचना अंग्रेजों तक पहुँचा दी।

गद्दार खुशहाल चन्द के अलावा अन्य दो जमींदारों ने भी गद्दारी की। योजना में सेंध लगी और डिप्टी कमिश्नर ने षडयंत्र रचा। उसने एक तरफ सुरक्षा बढ़ाई, दूसरी ओर सैनिकों के असंतोष के स्त्रोत का पता लगाने के लिए गुप्तचरों का जाल बिछाया, तीसरा राजा शंकरशाह के विरुद्ध प्रमाण तलाशना शुरू किया।

सुनियोजित योजना बनाकर फकीर के वेश में एक गुप्तचर राजा के पास भेजा गया। चूंकि सन् 1857 के महासंग्राम में संन्यासी फकीरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी अतः राजा ने उस फकीर को क्रांति मार्ग का पथिक माना और अपनी संपूर्ण योजना बता दी। गुप्तचर से सूचना मिलते ही 14 सितम्बर, 1857 को डिप्टी कमिश्नर अपने लाव–लश्कर के साथ राजा शंकरशाह के गाँव पुरवा पहुँचा।

राजा के घर की तलाशी ली गयी। इसमें क्रांति संगठन के दस्तावेजों के साथ राजा शंकरशाह द्वारा लिखित एक कविता मिली। यह कविता अपनी आराध्य देवी को संबोधित कर लिखी गयी थी। कविता थी–

मूंद मुख डंडिन को चुगलौं को चबाई खाई
खूंद डार दुष्टन को शत्रु संहारिका
मार अंगरेज, रेज कर देई मात चंडी
बचौ नाहिं बैरी–बाल–बच्चे संहारिकाम
संकर की रक्षा कर, दास प्रतिपाल कर
दीन की पुकार सुन आय मात कालका
खाइले मलेछन को, झेल नाहि करौ मात
भच्छन तच्छन कर बैरिन कौ कालिकाम

इसी तरह की प्रार्थना उनके बेटे रघुनाथशाह की हस्तलिपि में भी थी। दोनों क्रांतिवीर पिता–पुत्र को बन्दी बनाकर सैनिक जेल में रखा गया।

तुरंत डिप्टी कमिश्नर और दो अंग्रेज अधिकारियों की एक औपचारिक सैनिक अदालत बैठायी गयी। अदालत में देशद्रोह रूपी कविता लिखने के जुर्म में राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह को मृत्युदण्ड की सजा सुनाई गयी।

दुनिया में साहित्य सश्जन को लेकर दी जाने वाली यह अमानवीय, अनोखी सजा थी। क्रांतिकारी राजा और उनके पुत्र को मश्त्युदण्ड और फाँसी पर न चढ़ाकर तोप से उड़ाना सुनिश्चित किया गया।

जबलपुर में 18 सितम्बर, 1857 को एजेंसी हाउस के सामने फाँसी परेड हुई। राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह को जेल से लाया गया और तोप के मुँह से बांध दिया गया। दोनों के चेहरे आत्म–विश्वास से परिपूर्ण थे। राजा को देखने अपार जन–सैलाब उमड़ पड़ा। भीड़ उत्तेजित थी। राजा शंकरशाह ने आराध्य देवी से प्रार्थना की कि वे उनके बच्चों की रक्षा करें ताकि वे अंग्रेजों का देश निकाला कर सके। शीघ्र ही तोपचियों को तोप दागने की आज्ञा दी गयी। तोप चलते ही दोनों के अंग क्षत–विक्षत होकर चारों ओर बिखर गये।

रानी ने अधजले अवशेष को एकत्र कर उनका विधिवत अंतिम संस्कार किया। अंग्रेज राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह को तोप से उड़ा क्रांति की आग बुझाना चाहते थे लेकिन वह आग बुझी नहीं बल्कि दावानल बन गई। 52वीं रेजीमेंट के सैनिक उसी रात क्रांति की राह पर चल दिए।

क्रांति संघर्ष और बलिदान के बीच अंग्रेजों ने दमन चक्र चलाया और क्रांति की ज्वाला को दबाने का सघन अभियान शुरू किया। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को कुचल देने के बाद भी जनजातियों ने सन् 1866 तक युद्ध किया। वीर जनजातियों ने जहाँ प्रत्यक्ष युध्द किया वहीं क्रांतिकारियों को पनाह देकर परोक्ष संघर्ष भी किया। नगरों में असफलता के बाद भी वनों में क्रांति की आग सुलगती रही। अंग्रेजों ने जनजातियों के दमन का अलग ही मार्ग निकाला, उन्हें विभिन्न जातियों में विभाजित कर चोर, लूटेरा घोषित करना शुरू किया। इतिहास साक्षी है अंग्रेजों ने जितनी भी जनजातियों को चोर, लुटेरा घोषित किया, वे सभी घोषणाएँ सन् 1857 के बाद की हैं।

क्षेत्रवार हम देखें तो मध्यप्रदेश में सन् 1857 के मुक्ति संग्राम के विभिन्न केन्द्र थे, जिसमें बुन्देलखण्ड और नर्मदा घाटी में प्रमुख थे सागर, शाहगढ़, गढ़ाकोटा, खुरई, खिमलासा, दमोह, जबलपुर, नरसिंहपुर, मंडला, होशंगाबाद, बैतूल, चंदेरी और छतरपुर। मध्यभारत में ग्वालियर, इन्दौर, धार, अमझेरा, महिदपुर, मन्दसौर, नीमच और खरगौन। भोपाल रियासत में नवाब सिकन्दर बेगम अंग्रेजों के पक्ष में होने के बावजूद सीहोर छावनी स्थित फौज ने क्रांति कर देश की पहली लोकतांत्रिक सरकार, सिपाही बहादुर सरकार की स्थापना की।

जब क्रांति ज्वाला को दबाने का सघन अभियान चलाया गया तब क्रांति के महानायक तात्या टोपे ने लगभग 11 महीनों तक गुरिल्ला युद्ध जारी रखा। तब प्रदेश के भील नायकों ने उनके साथ मोर्चा थामा। लेकिन मानसिंह की गद्दारी ने अपना इतिहास रचा और सन् 1857 के महासंग्राम को अस्थाई विराम लगा। संघर्ष, शौर्य और कुर्बानियों का ऐसा उदाहरण इतिहास में कहीं नहीं मिलता।

छिंदवाड़ा के जनजातीय नायकों की हुंकार

स्वत्व, स्वाभिमान और स्वराज के लिए जनजातीय वीरों के बलिदान का एक ओर अध्याय है छिंदवाड़ा जिले के भोई जनजाति के अमर वीरों का। जब देश में सन् 1923 में राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आंदोलन चरम पर था, तब छिंदवाड़ा के जनजातीय नायक बादल भोई अपने साथियों के साथ स्वाधीनता संग्राम में शामिल हो गये। बादल भोई ने सन् 1923 में तामिया तहसील में सभा का आयोजन किया। उनके जोशीले भाषण और आह्वान से कोयतोर (गोंड) जनजाति के लोग स्वाधीनता संग्राम से जुड़ गए। उनके नेतृत्व में हजारों जनजाति वीरों ने मोर्चा थाम लिया। इन क्रांतिकारियों में बादल भोई के साथ सहरा भोई, अमरू भोई, इमरत भोई, लोटिया भोई, टापरू भोई और झंका भोई जैसे जनजाति नायकों ने स्वाधीनता संघर्ष करते हुए अमर बलिदान दिया।

नमक सत्याग्रह

स्वाधीनता आंदोलन के दूसरे चरण में जब देशभर में गाँधीजी के नेतश्त्व में असहयोग आन्दोलन चला तब जनजातियों ने अपने–अपने क्षेत्र में अंग्रेजों के प्रति असहयोग दर्ज किया।

असल में गाँधीजी के नेतश्त्व में चले स्वाधीनता संग्राम में सत्याग्रह, आन्दोलन की प्राण शक्ति था। इसी सत्याग्रह की ताकत ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी थी। गाँधीजी द्वारा ईजाद किये गये 'सत्याग्रह' तत्व को भारत–वासियों ने एक साथ आत्मसात किया। राष्ट्रपिता ने सन् 1929–30 के 'नमक सत्याग्रह' में नमक बना ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी। यह चुनौती पूरे देश ने दी। मध्यप्रदेश में 'नमक सत्याग्रह' ने ही 'जंगल सत्याग्रह' की नींव रखी। प्रदेश भर में यह आंदोलन बड़े उत्साह के साथ चलाया गया, अनेक देशभक्त शहीद हुए, लाठियाँ खायीं, जेल की यातनाएँ सहीं, पर टस से मस न हुए।

जंगल सत्याग्रह

आन्दोलन के इस दौर में सिवनी जिले का विशिष्ट योगदान रहा है। आदिवासियों ने जंगल सत्याग्रह में अपनी सशक्त भागीदारी सुनिश्चित की, पीढ़ियों से आदिवासियों द्वारा आक्रांताओं के विरोध में उठाई जा रही अपनी गौरव गाथा को बरकरार रखा और जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। (लेखिका कथाकार और स्तम्भकार हैं)

छठ पूजा का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया बृहस्पतिवार सुबह 6 – 33 बजे महिलाओं ने व्रत तोड़ा

अवध की आवाज ब्यूरो

मनकापुर गोंडा। मोतीगंज थाना क्षेत्र में छठ पूजा उत्सव उषा अर्घ्य नामक एक अनुष्ठान के साथ समाप्त होता है यह कार्तिक, शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि की सुबह किया जाता है। साल 2021 में यह अनुष्ठान 11 नवंबर को होगा क्योंकि इसी दिन सप्तमी तिथि भी है। इससे पहले आज व्रती लोगों ने छठ पूजा के दौरान दिया जाने वाला संध्या अर्घ्य दिया। 10 नवंबर को षष्ठी तिथि पर शाम के समय अस्त होते सूर्यदेव को छठ व्रत रखने वाले लोगों ने सूर्य देव को अर्घ्य दिया। व्रत रखने वालों को उगते सूर्य को प्रणाम करना चाहिए और इसलिए, अनुष्ठान को उषा अर्घ्य कहा जाता है, जिसमें उषा का अर्थ है भोर। दिलचस्प बात यह है कि षष्ठी की शाम को, भक्त सूर्यास्त के समय सूर्य देवता की पूजा करते हैं और इस परंपरा को संध्या अर्घ्य (शाम के समय किया जाने वाला अर्घ्य) कहा जाता है। छठ पूजा 2021 उषा अर्घ्य सूर्योदय समय और विधि के बारे में जानने के लिए पढ़ें। इस साल 11 नवंबर 2021 को 6:33 पर छठ पूजा का कार्यक्रम समाप्त हुआ इस दौरान

भवरिया पारा नई बस्ती इमिलिया यह मोतीगंज थाना क्षेत्र में पड़ता है और यह बिहार प्रांत से आए हुए लोग रहते हैं कुछ लोगों द्वारा बड़े ही धूमधाम से छठ पूजा का त्योहार मनाया जाता है जो 4 दिनों तक चलता है जिसका आज अंतिम दिन था महिलाएं सुबह 4:00 बजे से पूजा शुरू की और 6:33 पर उक्त पूजा समाप्त हुआ।

संचार विहार में धूमधाम से मनाई गयी महाछठ पूजा,

अवध की आवाज ब्यूरो

गोंडा। संचार विहार आईटीआई मनकापुर में मनोरंजन कर्मचारी क्लब के पास नवनिर्मित वरिष्ठ नागरिक उद्यान सरोवर में 11 नवम्बर को सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ देकर छठ महापर्व की पूजा की गई। छठ महापर्व पूजा की शुरूआत मुख्य अतिथि के रूप में आईटीआई लिमिटेड के इकाई प्रमुख एवं अतिरिक्त महाप्रबंधक अजय कुमार श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक आलोक कुमार गुप्ता, मानव संसाधन प्रमुख वाई एस चौहान, विजिलेंस विभाग के प्रमुख अरुन झा द्वारा पूजा–अर्चन कर की गयी। छठ पूजा पुरोहित आर पी मिश्रा एवं ओम नाथ तिवारी द्वारा कराई गयी। छठ पूजा की व्यवस्था छठ महापर्व पूजा के सचिव आलोक कुमार गुप्ता, आफिसर्स क्लब के सचिव संजीव कुमार श्रीवास्तव एवं महिला क्लब द्वारा की गई। पूजा में रविशंकर मिश्रा, विपिन शुक्ला, प्रवीण मिश्रा एवं अन्य लोगो ने भरपूर सहयोग किया। छठ पूजा में कर्मचारी संघ के महामंत्री उमेश चन्द्र, उपाध्यक्ष गुरूबक्स, राम दयाल, राम लखन वर्मा (मी. प्र.), रामराज मिश्रा, आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष जे के श्रीवास्तव, महामंत्री नदीम जाफरी, विनोद श्रीवास्तव ने आरती की। महाछठ पर्व पूजा में संचार विहार की महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। छठ महापर्व में सैकड़ो की संख्या में पुरुषों, बच्चों,अधिकारियों, कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर सहयोग करते हुए छठ पर्व का भरपूर आनंद लिया। मुख्य अतिथि द्वारा आरती करने के पश्चात पूरे सरोवर का निरीक्षण के साथ ही छठ पूजा सम्पन्न हुई। भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। मनकापुर के तहसीलदार नरसिंह नरायन वर्मा भी उपस्थित रहे। सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए मनकापुर कोतवाली के उप निरीक्षक लाल बहादुर सिंह अपनी टीम के साथ मुस्तैद रहे।

थाना पुलिस मोतीगंज ने थानाध्यक्ष अरविंद कुमार के निर्देशन में०२ वारंटी अभियुक्तों को किया गिरफ्तार,,

अवध की आवाज ब्यूरा

गोंडा। पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद गोंडा संतोष कुमार मिश्रा द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक महोदय गोंडा शिवराज के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी महोदय मनकापुर संजय तलवार के कुशल निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक थाना मोतीगंज अरविंद कुमार के मार्गदर्शन में पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक 10/11/2021 को वारंटी/वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी के संबंध

में चलाए गए अभियान के तहत वारंटी अभियुक्त को किया गिरफ्तार,, गिरफ्तार करता टीम में चौकी प्रभारी कहोबा, मदन लाल गौतम, कांस्टेबल मनोज कुमार सिंह गौतम, कांस्टेबल मनोज कुमार सिंह, कांस्टेबल आकाश शर्मा आदि लोगों के द्वारा गिरफ्तार करके माननीय न्यायालय सदर गोंडा भेजा गया।

वा कांस्टेबल आकाश शर्मा आदि लोगों ने गिरफ्तार करने में अहम भूमिका निभाई।

1. इरफान पुत्र इलियास
2. दरोगा पुत्र रज्जब निवासी गण ग्राम कनौता सिसवरिया थाना मोतीगंज जनपद गोंडा को संबंधित अपराध संख्या 5/13 धारा–323/352/452/504/506 आईपीसी में गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय सदर गोंडा भेजा गया।

उक्त अभियुक्तों को उप निरीक्षक चौकी प्रभारी काहोबा मदन लाल

एट प्रेस क्लब के लखन बने अध्यक्ष, मीडिया प्रभारी बने अरविन्द पिरौना, महामंत्री की बिहारी को जिम्मेवारी पत्रकारों के हित के लिये डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब हमेशा रहेगा तत्पर – मनोज राजा

अवध की आवाज ब्यूरो

पिरौना, जालौन। फर्जी पत्रकारों के चलते फील्ड में कार्य करने वाले वास्तविक पत्रकारों के सम्मान पत्रकारों के सम्मान को खतरा हो रहा है। इस लिये हम कलमकारों को ऐसे फर्जी लोगों के साथ साथ गणेश परिक्रमा पसंद करने वाले नेताओं एवं अधिकारियों बहादुर याज्ञिक, सुरेन्द्र कुमार पिरौना, करणवीर सिंह अमीटा, जितेन्द्र जीतू वीरेन्द्र पटेल, मीडिया प्रभारी अरविन्द्र कुमार पिरौना को बनाया गया। तो वहीं श्रीगोविन्द्र गुप्ता को एट प्रेस क्लब का कोषाध्यक्ष बनाया गया। इस मौके पर सभी पत्रकार साथियों ने डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब के मुखिया मनोज राजा को

से भी सचेत रहने की आवश्यकता है। उक्त बात वरिष्ठ पत्रकार मनोज राजा ने एट प्रेस क्लब के गठन अवसर पर बोलते हुये कही एट प्रेस क्लब के गठन के मौके पर सर्वसम्मति से लखन जी को अध्यक्ष पद की जिम्मेवारी दी गयी। जब कि महामंत्री बिहारीलाल को बनाया गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष अफसर हक बनाये गये तो उपाध्यक्ष के रूप में रविकान्त तिवारी, प्रदीप शिवहरे को जिम्मेवारी मिली। सचिव पद पर भरोसा दिया कि वह सभी साथी एक स्वर में चौबीस घण्टे साथ हैं और साथ रहेगें। इस मौके पर जिला मुख्यालय से हेमन्त चौरसिया ने भी पत्रकारों को एकजुट रहकर पत्रकारिता के लिये इसके मापदण्डों पर कार्य करने की नसीहत दी। उक्त अवसर पर कोंच से वरिष्ठ पत्रकार अंजनी श्रीवास्तव, संजय सोनी, तरूण निरंजन ने भी संबोधित किया। प्रेस क्लब के गठन अवसर पर आदित्य सतोह, केके श्रीवास्तव आदि लोग मौजूद रहे।

ग्राम रोजगार सेवक आशीष कनौजिया व ग्राम प्रधान,ने दी छठ पूजा की बधाई

अवध की आवाज ब्यूरो

निघासन खीरी। छठ पूजा के पावन अवसर पर आज ग्राम पंचायत मुंडा बुजुर्ग में ग्राम रोजगार सेवक आशीष कनौजिया ग्राम प्रधान मनोज कुमार व ग्राम विकास अधिकारी उपदेश वर्मा ने सभी ग्राम वासियों को दी बधाई साथ ही वही के पंडित जी से कुछ ज्ञान की बातें भी जानिए पंडित जी ने कहा कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाने वाला छठ पर्व छठ पूजा आज देशभर में धूमधाम से मनाया जा देव की उपासना करती हैं और छठ मैय्या की पूजा छठ मैया की पूजा हैं। नहाय–खाय और खरना के बाद आज के दिन डूबते सूरज का अर्घ्य दिया जाता है। वहीं, 11 नवंबर के दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत का समापन किया जाता है छठ व्रत रखने और पूजा करने से छठ मैय्या की आशीष मिलती है। संतान को जीवन में सुख मिलता है और सूर्य देव की कृपा से निरोगी जीवन की प्राप्ति होती है। आइए जानते हैं 10 नवंबर 2021, बुधवार के दिन संध्या के

रहा है। इस दिन सूर्य देव की उपासना सूर्य देव की पूजा जाती है। संतान के सुखी जीवन और संतान प्राप्ति के लिए छठ का व्रत छठ व्रत रखा जाता है। 36 घंटे निर्जला व्रत रखकर महिलाएं सूर्य समय डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। आइए जानते हैं पहला सूर्य अर्घ्य किस समय दिया जाएगा। इस दौरान अतर सिंह ,रामाशीष, पूर्व प्रधान रमेश लोधी ,माता प्रसाद व समस्त ग्रामीण मौजूद रहे।

दादनपुर में पति द्वारा पत्नी की बेरहमी से कुल्हाड़ी मारकर हत्या

अवध की आवाज ब्यूरो

माधौगढ़, जालौन। नि.स गोहन थाना के दादनपुर गांव में पति ने घरेलू विवाद के चलते अपनी पत्नी की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी और कमरे में शव को छोड़कर फरार हो गया। घटना की सूचना पर एडिशनल एसपी और सीओ मौके पर पहुंचकर जांच कर रहे हैं व आरोपी को पकड़ने के लिए दबिशें दी जा रही हैं। रोज के कलह के कारण दादनपुर में नत्थू कुशवाहा ने अपनी पत्नी ननकी देवी 40 की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी। मुहल्ले के लोगों को पता चला तो घटना की जानकारी हुई। हत्या का प्रमुख कारण क्या था? यह ठीक से पता नहीं चल सका है लेकिन जानकारी में आ रहा है कि पति और पत्नी के बीच रतनगढ़ मंदिर जाने को लेकर विवाद हुआ था। फिलहाल आरोपी की सरावन गांव में छुपे होने की सूचना पर काफी संख्या में पुलिस उसकी खोज में लगी हुई है।

मायावती ने की कासगंज में पुलिस हिरासत में युवक की मौत मामले की उच्चस्तरीय जांच की मांग

लखनऊ, (वेब वार्ता)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने कासगंज में पुलिस हिरासत में एक युवक की मौत को

दुखद और शर्मनाक बताते हुये राज्य सरकार से घटना की उच्चस्तरीय जांच कराने तथा दोषियों को सखद्त सजा देने की मांग की है। मायावती ने बश्हस्पतिवार को ट्वीट किया, ''कासगंज में पुलिस हिरासत में एक और युवक की मौत अति दुखद व शर्मनाक है। सरकार घटना की उच्चस्तरीय जांच कराकर दोषियों को सखद्त सजा दे तथा पीड़ित परिवार की मदद करे। उत्तर प्रदेश सरकार हिरासत में आए दिन होने वाली मौतों को रोकने व पुलिस को जनता की रक्षक बनाने में विफल साबित हो रही है,जो अति चिन्ता की बात है। गौरतलब है कि कासगंज में अल्ताफ नामक युवक की पुलिस हिरासत में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी। पुलिस अधीक्षक रोहन प्रमोद बोत्रे ने बताया कि मंगलवार को एक नाबालिग लड़की को बहला–फुसलाकर साथ ले जाने के मामले में पूछताछ के लिए नगला सैयद इलाके के रहने वाले अल्ताफ को हिरासत में लिया गया था। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान अल्ताफ ने शौचालय जाने की बात कही, उसे हवालात के अंदर बने शौचालय जाने दिया गया,जहां उसने जैकेट के हुक में लगी डोरी को शौचालय के नल में फंसा कर अपना गला घोंटने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि आरोपी के नहीं लौटने पर पुलिसकर्मी शौचालय गए और वहां उन्होंने अल्ताफ को गंभीर अवस्था में पाया, तत्काल उसे अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। मश्तक के परिजन का आरोप है कि पुलिस द्वारा बेरहमी से पीटे जाने की वजह से उसकी मौत हुई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि इस मामले में लापरवाही बरतने के आरोप में पांच पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुआ कर करेत्तर एवं राजस्व कार्यों की मासिक समीक्षा बैठक का आयोजन:

जिलाधिकारी ने दिये समस्त तहसीलों में अमीनों का मानक पूर्ण कराने के निर्देशरू

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। (सू0वि0) जिलाधिकारी रवीन्द्र कुमार की अध्यक्षता में आज विकास भवन सभागार में कर करेत्तर एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक माह अक्टूबर 2021 तक की प्रगति के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों के साथ आयोजित की गई। जिलाधिकारी ने कर करेत्तर एवं लक्ष्य वसूली के सम्बन्ध में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिये कि लम्बित राजस्व वादों का शीघ्र सुनवाई करके निस्तारण किया जाये। कुछ तहसीलों में लक्ष्य के अनुरूप वादों का निस्तारण न किये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुये तत्काल लक्ष्य निर्धारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने स्टाम्प वाद, राजस्व संहिता के अविवादित वरासत, अविवादित दाखिल खारीज, तालाब, आवासीय भूमि, कृषि भूमि, वृक्षारोपण आदि का आवंटन, कुम्हारी कला, चकमार्ग तथा सार्वजनिक उपयोग की भूमि व तालाब पोखरों आदि से हटाये गये अतिक्रमण एवं अवैध कब्जे पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली का लक्ष्य शतप्रतिशत पूरा किया जाये। जिलाधिकारी ने आई0जी0आर0एस0 के अन्तर्गत प्राप्त शिकायतों का निस्तारण, रिट याचिकायें, खतौनी अंश निर्धारण की कार्यवाही, स्वामित्व योजना, रोस्टर के अनुसार खतौनियों का दाखिला, एंटी भू माफिया जैसे कार्यों पर अब तक किये गये कार्यों की प्रगति को बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने मासिक लक्ष्य के सापेक्ष पूर्ति के सम्बन्ध में वाणिज्य कर, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन, आबकारी, परिवहन, ऊर्जा विभाग, नगर विकास, वन विभाग, खनन आदि विभागों को निर्धारित समय में राजस्व की वसूली पूरी करने के निर्देश दिये। उन्होंने ए०आर०टी०ओ०(प्रवर्तन) को अधिक से अधिक वसूली करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी द्वारा सम्बन्धित को निर्देश दिये गये है कि राजस्व का लक्ष्य बढ़ाया जाये। उन्होंने कहा जिन दुकानों की जांच होनी है सम्बन्धित उप जिलाधिकारी तत्काल जांच पूरी कराये। गंगा एक्सप्रेस वे की समीक्षा करते हुए कहा कि कार्य जल्द से जल्द पूरा कराया जाये। उन्होंनें समस्त उप जिलाधिकारी/तहसीलदारों को निर्देशित करते हुये कहा कि सभी

तहसीलों में अमीनों का मानक अवश्य पूर्ण होना चाहिये तथा समस्त उप जिलाधिकारी पाक्षिक रूप से वसूली की समीक्षा अवश्य करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी नरेन्द्र सिंह, नगर मजिस्ट्रेट श्रीमती विजेता, समस्त उपजिलाधिकारी/तहसीलदार सहित समस्त सम्बन्धित उपस्थित रहे।

मुख्य आरक्षी अरुण कुमार थाना इटियाथोक को उनके उत्कृष्ट कार्यों हेतु माह अक्टूबर 2021 का सर्वोत्तम बीट पुलिस अधिकारी चुना गया।

अवध की आवाज ब्यूरो

गोंडा। मुख्य आरक्षी अरुण कुमार थाना इटियाथोक को बीट क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों हेतु माह अक्टूबर–2021 का ष्सर्वोत्तम बीट

पुलिस अधिकारी चुना गया। जिसके लिए श्रीमान अपर पुलिस महानिदेशक गोरखपुर जोन द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रसपा जिला अध्यक्ष सुरेश शुक्ला की अगुवाई में राष्ट्रीय अध्यक्ष का हुआ जोरदार स्वागत

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। इटियाथोक कस्बा व बाजार स्थित आरपीएस इंटर कॉलेज में बुधवार दोपहर करीब 12 बजे सामाजिक परिवर्तन रथ यात्रा लेकर प्रदेश पदाधिकारियों के साथ पहुंचे प्रसपा राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव का जिला अध्यक्ष सुरेश शुक्ला की अगुवाई में प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने फूल माला पहना कर जोरदार स्वागत अभिनंदन किया। जनसभा प्रांगण में उनके आगमन पर हजारों की संख्या में मौजूद कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने शिवपाल यादव जिंदाबाद प्रसपा पार्टी जिंदाबाद के नारे लगाते हुए तालियों की गड़गड़ाहट से अभिवादन किया। मंच पर पहुंचे राष्ट्रीय अध्यक्ष का जिला अध्यक्ष सुरेश शुक्ला के द्वारा गदा व तलवार देकर आगामी चुनाव में विजय का परचम फहराने का ईश्वर से कामना की। राष्ट्रीय अध्यक्ष नें अपने संबोधन में उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया और वर्तमान सरकार के खामियों को गिनाते हुए अपनी सरकार बनने पर किसानों के बकाया गन्ना मूल्य का भुगतान मिल मालिकों से ब्याज सहित दिलाने व प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी या पांच लाख रुपए देने, सभी बिजली उपभोक्ताओं को प्रतिमाह 300 यूनिट बिजली मुफ्त देने सहित तमाम जनहितकारी घोषणाएं की जनसभा को जिला अध्यक्ष सुरेश शुक्ला, प्रदेश अध्यक्ष सुंदरलाल लोधी, राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव वीरपाल सिंह यादव व अन्य पदाधिकारियों नें संबोधित करते हुए लोगों से 2022 विधानसभा चुनाव में पार्टी समर्थित प्रत्याशियों को मत व समर्थन देकर भारी मतों से विजई बनाने की अपील की।

पद्म अवॉर्ड्स के दौरान करण जौहर को ढूंढ रही थीं कंगना रनौत

मुंबई, (वेब वार्ता)। ऐक्ट्रेस कंगना रनौत को हाल ही पद्म श्री सम्मान से नवाजा गया। उनके साथ–साथ यह सम्मान एकता कपूर और करण जौहर को भी दिया गया। कंगना ने बताया कि पद्म

अवॉर्ड्स सेरिमनी में उन्होंने करण जौहर को खोजने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह उन्हें वहां नहीं दिखे। अगर दिखते तो वह करण से जरूर बात करतीं।

कंगना रनौत और करण जौहर के बीच के मतभेद और लड़ाई किसी से छिपी नहीं है। दोनों के बीच विवाद साल 2017 में हुआ था। उस वक्त कंगना ने करण जौहर के शो पर उन्हें ही बॉलिवुड में नेपोटिजम को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था और उन्हें 'मूवी माफिया' तक कहा था। इसके बाद करण और कंगना के बीच कई मौकों पर तकरार होती रही।

शायद इसी वजह से ऑर्गनाइजर्स ने भी पद्म अवॉर्ड्स के दौरान इस तरह की व्यवस्था की थी कि कंगना रनौत और करण जौहर आमने–सामने न आ सकें। इस बारे में कंगना ने टाइम्स नाउ समिट में कहा, 'हमारी सेरिमनी अलग–अलग वक्त पर हुईं। मुझे ऐसा लगता है कि हम दोनों को एक–दूसरे से अलग रखने के लिए उन्होंने अलग–अलग टाइम रखा। मैंने करण जौहर को वहां ढूंढने की कोशिश की, लेकिन वह वहां नहीं थे।'

कंगना से जब पूछा गया कि अगर करण उन्हें वहां मिलते तो क्या वह उनसे बात करतीं, तो ऐक्ट्रेस ने कहा, 'हां, बिल्कुल। दो लोगों के बीच मतभेद हो सकते हैं, असहमति और विवाद हो सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप को–एग्जिस्टेंस में विश्वास न रखें। मैं हर तरह की को–एग्जिस्टेंस को बढ़ावा देती हूं।'

कंगना ने आगे कहा, 'कुछ लोग जो अंदर आए और अपना सम्मान लिया, उन्होंने मुझे निरर्थक महसूस कराया। उनमें से कुछ अपनी उपस्थिति में इतने सरल और विशाल थे कि जब वो सामने आए और उनका परिचय हुआ तो मुझे लगा कि मैं तो बहुत मामूली हूं। बहुत कम ही मुझे ऐसा अहसास होता है। ऐसे लोगों को अपना पुरस्कार लेते हुए देखते हुए मुझे लगा कि क्या मैं इतनी अच्छी हूं?

मेकर्स ने 'बिग बॉस १५' से अफसाना को किया बाहर? की थी चाकू से खुद को मारने की कोशिश

मुंबई, (वेब वार्ता)। 'बिग बॉस 15' में इस वक्त आए दिन ट्विस्ट आ रहे हैं। हाल ही राकेश बापट हेल्थ इशूज के कारण शो से बाहर हो गए, वहीं अब खबर है कि

अफसाना खान को भी बाहर कर दिया गया है। अफसाना ने हाल ही वीआईपी जोन में एक्सेस ने मिलने पर खूब हंगामा किया था। उन्होंने चाकू से खुद को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की थी। अफसाना की शमिता शेट्टी से भी खूब लड़ाई हुई और इस दौरान उन्हें पैनिक अटैक आ गया। 'स्पॉटबॉय' की रिपोर्ट के अनुसार, अफसाना खान 'बिग बॉस 15' से बाहर आ गई हैं। एक सोर्स ने बताया कि अफसाना को पैनिक अटैक आ गया था, जिसके बाद उन्हें शो से बाहर ले जाया गया। सोर्स ने कहा, 'वीआईपी टास्क हारने के बाद और दोस्तों से धोखा मिलने के कारण अफसाना का दिल टूट गया था। उन्होंने शमिता शेट्टी से भी लड़ाई की, जिसके बाद उन्हें पैनिक अटैक आ गया। उन्होंने चाकू लेकर खुद को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की। किचन एरिया में उन्होंने खुद को काटने की कोशिश की। इस कारण मेकर्स ने अफसाना खान को शो छोड़ने के लिए कह दिया। हालांकि अभी इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। बता दें कि बिग बॉस ने हाल ही वीआईपी जोन टास्क करवाया था। इसमें घर के कैप्टन उमर रियाज (न्उंत त्प्रं) को पावर दी गई थी कि वो किन्हीं 3 सदस्यों को चुनें जिन्हें वह अपने साथ वीआईपी जोन में ले जाना चाहते हैं। इस राउंड में उमर, करन कुंद्रा, तेजस्वी प्रकाश और करन कुंद्रा को चुनते हैं। उमर इस टास्क से अफसाना खान को बाहर कर देते हैं, जिससे वह आपा खो देती हैं।

आरआरआर के सेट से राम चरण और जूनियर एनटीआर की एक्सक्लूसिव तस्वीर हुई वायरल

हैदराबाद, (वेब वार्ता)। राम चरण और एनटीआर–स्टारर आरआरआर एक बहुप्रतीक्षित फिल्म है। यह मल्टी–स्टारर फिल्म लोकप्रिय फिल्म निर्माता एसएस राजामौली द्वारा निर्देशित एक अखिल भारतीय फिल्म है। मेकर्स जोर शोर से फिल्म का प्रमोशन कर रहे हैं। उन्होंने सेट पर जूनियर एनटीआर और राम चरण की चिल करते हुए एक अनदेखी फोटो पोस्ट की है, जिसने सभी का ध्यान खींचा है। ट्विटर पर एक्सक्लूसिव फोटो साझा करते हुए, आरआरआर निमार्ताओं ने लिखा कि गाने की शूटिंग के बीच हमारे स्टार्स का चिलिंग करते हुए बीटीएस। यह एक्सक्लूसिव फोटो आरआरआर के सेट की है। फोटो में राम चरण और एनटीआर को एक–दूसरे के साथ मस्ती करते हुए देखा जा सकता है। फिल्म का गाना नाटू नाटू बुधवार को रिलीज किया गया है, ऐसे में इस गाने के हाई वोल्टेज डांस नंबर होने की उम्मीद है। इस गाने का हिंदी वर्जन नाचो नाचो है।

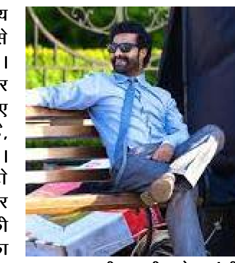

एम.एम. कीरवानी ने संगीत तैयार किया है, और गाने के तेलुगु संस्करण को गायक राहुल सिप्लीगंज और काला भैरव ने गाया है। गाने के बोल चंद्रबोस ने लिखे हैं।

डिकपल्ड में नजर आएगी माधवन, सुरवीन चावला की जोड़ी

मुंबई,(वेब वार्ता)। अभिनेता आर. माधवन और सुरवीन चावला नेटफिलक्स की आगामी कॉमेडी ड्रामा डिकपल्ड में दिखाई देंगे। माधवन ने कहा कि मैं आर्य का किरदार निभा रहा हूं, जो एक पल्प–फिक्शन लेखक है, जो निष्पक्षता और स्पष्टता के साथ–साथ समझौता नहीं करता है। वहीं शो में सुरवीन मेरी शांत पत्नी श्रुति का रोल कर रही है। सुरवीन के साथ काम करके बहुत खुशी हुई और मुझे उम्मीद है कि हमने स्क्रीन पर जो केमिस्ट्री और हास्य पैदा करने की कोशिश की है, वह दर्शकों को भी खूब हंसाएगा। माधवन को आर्य और सुरवीन को श्रुति के रूप में देखा जाएगा। दोस्तों से लेकर जीवन साथी तक आर्य और श्रुति बहुत कुछ झेल चुके हैं। व्यंग्यात्मक, मुखर पल्प

फिक्शन लेखक आर्य और उसकी कॉर्पोरेट सूट की सीईओ पत्नी श्रुति अपनी शादी के बाद जॉब छोड़ने का फैसला करती है। सुरवीन चावला ने कहा कि डिकपल्ड एक आधुनिक जोड़े के रिश्ते पर प्रकाश डालती है जो अपनी पवित्रता को बरकरार रखने की कोशिश करते हुए शादी की बारीकियों के माध्यम से काम करने की कोशिश कर रहा है। माधवन मेरे पति आर्य का किरदार बेहद सहजता से निभा रहे हैं और उनकी कॉमिक टाइमिंग बहुत अच्छी है। डिकपल्ड के बारे में बोलते हुए, निर्माता मनु जोसेफ ने कहा कि डिकपल्ड एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो किसी भी स्थिति में देख सकता है कि कैसे दूसरों को अनदेखा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। स्वाभाविक रूप से, वह जहां भी जाता है, लेकिन उसकी परेशानी कम नहीं होती है। हमारा लक्ष्य कहानी को वास्तविक रखना था।

पेट्रोल और डीजल की कीमत सातवें दिन भी स्थिर

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में भारी गिरावट आने के बावजूद घरेलू स्तर पर सरकारी तेल विपणन कंपनियों ने आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया, जिससे राजधानी दिल्ली में पेट्रोल और डीजल की कीमतें सातवें दिन भी स्थिर रहीं। केन्द्र सरकार द्वारा पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में क्रमशः पांच रुपये तथा 10 रुपये प्रति लीटर की कमी करने से देश में इसकी कीमतों में कमी आयी थी। इसके बाद उत्तर प्रदेश, कर्नाटक सहित देश के 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने इन दोनों उत्पादों पर मूल्य वर्धित कर (वैट) में कमी की है। इससे संबंधित राज्यों में इन दोनों पेट्रोलियम उत्पाद की कीमतों में और कमी आयी है। इसका असर आज भी पेट्रोल–डीजल की कीमतों पर बरकरार है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मंगलवार को ब्रेंट क्रूड की कीमत 85 डॉलर प्रति बैरल पर पर पहुंच गयी थी लेकिन बुधवार को इसके दाम में भारी गिरावट देखने को मिली। घरेलू बाजार में बुधवार को सातवें दिन भी पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ। राजधानी दिल्ली में देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के पंप पर आज पेट्रोल की कीमत 103.87 रुपये प्रति लीटर और डीजल का दाम 86.67 रुपये प्रति लीटर पर टिका रहा। पेट्रोल–डीजल के मूल्यों की रोजाना समीक्षा होती है और उसके आधार पर हर दिन सुबह छह बजे से नई कीमतें लागू की जाती हैं।

मोदी शुक्रवार को रिजर्व बैंक की दो अभिनव उपभोक्ता केंद्रित पहलों की शुरुआत करेंगे

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को पूर्वाह्न 11 बजे वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से भारतीय रिजर्व बैंक की दो अभिनव उपभोक्ता केंद्रित पहलों, भारतीय रिजर्व बैंक की खुदरा प्रत्यक्ष योजना और रिजर्व बैंक एकीकृत लोकपाल योजना की शुरुआत करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) की ओर से जारी एक विज्ञप्ति के मुताबिक भारतीय रिजर्व बैंक खुदरा प्रत्यक्ष योजना का उद्देश्य सरकारी प्रतिभूति बाजार में खुदरा निवेशकों की पहुंच बढ़ाना है। इसके तहत खुदरा निवेशकों के लिये भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिभूतियों में सीधे निवेश करने का रास्ता खुल जायेगा। पीएमओ ने कहा, "निवेशक भारतीय रिजर्व बैंक के हवाले से ऑनलाइन सरकारी प्रतिभूति खाते आसानी से खोल सकते हैं और उन प्रतिभूतियों का रख–रखाव कर सकते हैं। यह सेवा निशुल्क होगी। पीएमओ के मुताबिक एकीकृत लोकपाल योजना का उद्देश्य शिकायतों को दूर करने वाली प्रणाली में और सुधार लाना है ताकि संस्थाओं के खिलाफ ग्राहकों की शिकायतों को दूर करने के लिये भारतीय रिजर्व बैंक नियम बना सके। पीएमओ ने कहा, "इस योजना की केंद्रीय विषयवस्तु 'एक राष्ट्र–एक लोकपाल' की अवधारणा पर आधारित है। इसके तहत एक पोर्टल, एक ई–मेल और एक पता होगा, जहां ग्राहक अपनी शिकायतें दायर कर सकते हैं। ग्राहक एक ही स्थान पर अपनी शिकायत दे सकते हैं, दस्तावेज जमा कर सकते हैं, अपनी शिकायतों–दस्तावेजों की स्थिति जान सकते हैं और फीडबैक दे सकते हैं। इसके लिए एक बहुभाषी टोल–फ्री नंबर भी दिया जायेगा, जो शिकायतों का समाधान करने तथा शिकायतों को दायर करने के बारे में सभी जरूरी जानकारी प्रदान करेंगे। कार्यक्रम में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास भी उपस्थित रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने आचार्य कृपलानी और मौलाना आजाद की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता सेनानियों आचार्य कृपलानी और मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती पर बश्हस्पतिवार को उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कृपलानी को श्रद्धांजलि देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि महात्मा गांधी के नेतश्त्व में देश की आजादी के आंदोलन की अगुवाई करने वालों में वह शुमार थे। मोदी ने कहा, "देश को लेकर उनकी एक दूरदृष्टि थी और एक सांसद होने के नाते उन्होंने इसे पूरा करने की कोशिश की। पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में उन्होंने बड़ा योगदान दिया। उनकी जयंती पर मैं उन्हें नमन करता हूं। कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके कृपलानी की गिनती समाजवादी पुरोधा के रूप में भी होती है। एक अन्य ट्वीट में प्रधानमंत्री ने आजाद को श्रद्धांजलि

देते हुए कहा, "वह एक महान चिंतक और विद्वान थे। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका प्रेरित करने वाली है। वह शिक्षा के क्षेत्र को लेकर बेहद गंभीर थे और उन्होंने समाज में भाईचारे को मजबूत करने के लिए काम किया।

योगी ने था: गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित की

लखनऊ,(वेब वार्ता)। योगी आदित्यनाथ सरकार अब भारत–नेपाल सीमा के पास थारू गांवों में उप–स्वास्थ्य केंद्रों पर विशेष ध्यान दे रही है। इन गांवों में ऑपरेशन ममता ने स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित थारू महिलाओं की जिंदगी बदल दी है। सरकार के प्रवक्ता के अनुसार, थारू बहुल गांवों में छह उप–स्वास्थ्य केंद्रों के परिवर्तन के बाद, तराई क्षेत्र के चंदन चौकी, गौरीफंता, नजोटा, छेदिया पश्चिम, बनकाटी और धुस्किया ने प्रसव और अन्य सुविधाओं के लिए सुनिश्चित किया है। सभी सुविधाएं अब आसानी से उपलब्ध हैं। पहले ये इलाके अंधेरे में डूबे रहते थे। इन क्षेत्रों में पानी, बिजली और चिकित्सा सुविधाएं नहीं थीं, लेकिन योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद, उन्होंने इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य उप–केंद्रों की स्थापना और 24 घंटे चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए उचित बिजली सुनिश्चित की। सरकार ने अब केंद्रों पर सभी जरूरी सुविधाएं मुहैया करा दी हैं ताकि प्रसूति रोग विशेषज्ञों को मरीजों के इलाज के लिए लंबा सफर न करना पड़े। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार राज्य में कुल 3,602 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं जिनमें 14,408 बेड हैं और 943 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र 28,290 बेड के साथ हैं। स्वास्थ्य विभाग के अस्पतालों में कोविड बेड की क्षमता 70,000 से अधिक करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा सीएचसी और पीएचसी में प्रीफैब्रिकेटेड वार्ड बनाए जा रहे हैं।

देघा में फूट डालो और राज करो की मानसिकता खतरे में : दिग्विजय सिंह

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि फासीवाद आता है तो उसके लिए जरूरी हो जाता है डर पैदा करना, नफरत पैदा करना, क्योंकि यही फासीवाद का मूलमंत्र रहा है, लेकिन अब फूट डालो और राज करो की मानसिकता खतरे में है।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद ने बुधवार को अपनी किताब सनराइज ओवर अयोध्या का विमोचन किया। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और पूर्व केंद्रीय मंत्री पी.चिदंबरम भी मौजूद रहे।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि हिंदुत्व शब्द का हिंदू धर्म और सनातनी परंपराओं से कोई लेनादेना नहीं है। उन्होंने संघ पर हमला बोलते हुए कहा, विनायक दामोदर सावरकर धार्मिक व्यक्ति नहीं थे। गऊ को माता क्यों माना जाए? आरएसएस और भाजपा हिंदू को परिभाषित करने के लिए हिंदुत्व शब्द लाए। इससे लोग भ्रम में पड़ गए, क्योंकि आरएसएस अफवाह फैलाने में माहिर है। अब तो सोशल मीडिया के रूप में उन्हें बड़ा हथियार मिल गया है। सिंह ने कहा, आजकल कहा जा रहा है कि हिंदू खतरे में हैं। 500 साल के मुगलों–मुसलमानों के राज में हिंदू धर्म का कुछ नहीं बिगड़ा, 150 साल के ईसाइयों के शासन में हिंदू का कुछ नहीं बिगड़ा तो अब क्या खतरा हो सकता है? यह बहकावे की राजनीति है। लोग इनकी मंशा समझ गए हैं, इसलिए अब खतरा उस मानसिकता और उस विचारधारा को है, जिसने हमेशा से ही अंग्रेजों की तरह फूट डालो और राज करो के जरिये ही राज करने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा, भारत के इतिहास में धार्मिक आध

ार पर मंदिरों का विध्वंस भारत में इस्लाम आने के पहले भी होता रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जो भी राजा दूसरे राजा के क्षेत्र को जीतता था, वह अपने ही धर्म को हमेशा उस राजा के धर्म पर तरजीह देने की कोशिश करता था, लेकिन कहा गया कि मंदिरों की तोड़फोड़ इस्लाम आने के साथ शुरू हुई। सिंह ने कहा, देश में राम जन्मभूमि कोई नया विवाद नहीं था, लेकिन विश्व हिंदू परिषद (विहिप), आरएसएस ने इसे पहले कभी मुद्दा नहीं बनाया। लेकिन जब साल 1984 के लोकसभा चुनाव में वे दो सीटों पर ही सिमट कर रह गए, तब उन्होंने लोगों की धार्मिक भावना को भुनाने के लिए इसे मुद्दा बनाया और इसके साथ ही देश में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का गांधीवादी समाजवाद विफल हो गया। हालात ने भाजपा को कट्टर धार्मिक रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर दिया। नफरत के बीज बोते हुए आडवाणी की रथयात्रा यानी समाज को तोड़ने वाली यात्रा निकली गई। उन्होंने कहा कि वह स्वयं सनातन धर्म के अनुयायी हैं, लेकिन हिंदुत्व का न तो हिंदू धर्म से कोई लेनादेना है और न ही सनातनी परंपराओं से कोई लेनादेना है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि खतरा केवल उस मानसिकता और कुंठित सोची–समझी विचारधारा को है, जो देश में अंग्रेजी हुकूमत की फूट डालो और राज करो की विचारधारा थी। उसको आज प्रतिवादित कर अपने आप को कुर्सी पर बैठाने का जो संकल्प लिए हुए हैं, खतरा केवल उन्हें है। समाज और हिंदू धर्म को आज देश में कोई खतरा नहीं है।

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। पत्रकार सुरक्षा महा समिति उत्तर प्रदेश दिनांक 11/11/2021 दिन बृहस्पतिवार को प्रदेश उपाध्यक्ष गुड्डू मिश्रा से मिलकर रिहान अहमद संवाददाता अवध की आवाज ने शिष्टाचार भेंट किया एवं हालचाल लिया कार्यालय में मौजूद पत्रकार अवधेश सिंह आकाश गुप्ता संतोष कुमार योगेश द्विवेदी सभी लोगों ने मिलकर प्रदेश उपाध्यक्ष से प्रदेश के संगठन के बारे में बातचीत की रीहान ने कहा उन्नाव काशीमनगर पत्रकार महा समिति में कम से कम 20 लोगों की सदस्यता होगी वहीं पर कसाई चौराहा से रिजवान भाई ने पत्रकार महा सुरक्षा समिति की सदस्यता ली। सभी पत्रकार बंधुओं का प्रदेश उपाध्यक्ष द्वारा यथोचित स्वागत किया गया।

8 बटालियन पी0ऐ0सी0 बरेली के 5 अरक्षियों का निलंबन जल्दबाजी में लिया गया निर्णय तो नहीं

मिठाई की दुकान के मालिक ने शपथ पत्र देकर किसी भी चोरी या नुकसान होने की बात नकारी

अवध की आवाज

सीतापुर। रेउसा में स्थित हनुमान संकट मोचन मंदिर पर दिनांक 12 अक्टूबर 2021 को 8 बटालियन पी0 ऐ0 सी0 बरेली के 5 आरक्षी ड्यूटी पर तैनात थे। इन जवानों का नाम ओम प्रकाश मिश्रा, अमित कुमार, अनुज कुमार, शिवम त्यागी व धर्मेंद्र सिंह ड्यूटी पर तैनात थे। मंदिर पर सभी पूजा पाठ होने के बाद प्रसाद का वितरण हुआ और सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। परंतु एक इसी मिठाई की दुकान पर उसी दिन मिठाई चोरी का वीडियो वायरल हुआ जिसमें मिठाई चोरी का आरोप वहाँ पर तैनात 5 आरक्षियों पर लगाया गया और आनन फानन में आरक्षियों पर विभाग द्वरा कार्यवाही हुई और उनको निलंबित कर दिया गया। परंतु मिठाई की दुकानदार के शपथ पत्र ने उक्त आरक्षियों पर लगाये गए आरोपों को झूठा साबित कर दिया है। मिठाई दुकानदार रमेश कुमार ने अपना एक शपथ पत्र देकर मिठाई की दुकान पर किसी भी चोरी या मिठाई के किसी भी नुकसान होने से इनकार किया है। गौर तलब यह है कि उक्त पांचों अरक्षियों पर इतने गभीर आरोप किस आधार पर लगाये गए। क्या वे वास्तव में दोषी थे ? या उनको फसाने की किसी ने कोई साजिश रची थी।

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954
मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com
R.N.I.- UPHIN/2012/45127
नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।